डॉ० कविता कुमारी सिंह
'हिन्दी - विभाग'

P.G, II sem

विषय:

आधुनिक काल — हिन्दी साहित्येतिहास का अंतिम कालखण्ड आधुनिक काल से जाना जाता है। आधुनिक शब्द दो अर्थों को अपने में लपेटे हुए है। एक है मध्यकाल से भिन्नता और दूसरा है इहलौकिक दृष्टिकोण। मध्यकाल अपने अवरोध, जड़ता और रूढ़िवादिता के कारण स्थिर और रुद्ध हो चुका था। 1857 का विद्रोह मध्ययुग की जड़ता की समाप्ति और आधुनिक युग के आरम्भ का उद्घोष था। सामन्तवादी शक्तियाँ अपनी सारी शक्ति

लगाकर समाप्त हो गई और देश के प्रबुद्ध वर्ग ने नये सिरे से सोचना आरम्भ किया। इसी प्रकार रीतिकाल में साहित्य अपने काव्य और शैली की दृष्टि से रुद्ध हो चुका था। आधुनिक काल ने इस जड़ता को खंडित किया और जीवन की धारा विविध स्त्रोतों में फूट निकली। साहित्य मनुष्य के सुख-दुःख के साथ जुड़ गया।

आधुनिक युग में सोचने-विचार का दृष्टिकोण सांसारिक हो गया और धर्म दर्शन, साहित्य, चित्र आदि के प्रति

7 सोमवार

नया दृष्टिकोण सामने आया। इस काल में सुधार, परिष्कार और अतीत की व्याख्या नये ढंग से की गई। इस ऐतिहासिक प्रक्रिया में साहित्य की भाषा भी बदली और ब्रजभाषा का स्थान खड़ी-बोली ने ले लिया।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल को गद्य और काव्य को दो खण्डों में बाँट दिया। दोनों खण्डों को पुनः दो प्रकरणों में बाँटा गया। गद्य के पहले प्रकरण में ब्रजभाषा और खड़ीबोली का विवेचन किया गया और दूसरे खण्ड में

8 मंगलवार

गद्य साहित्य का उद्भव निरूपित किया गया। इसे फिर तीन उत्थानों प्रथम, द्वितीय और तृतीय में विभाजित किया गया है। काव्य-खण्ड में भी दो प्रकरण है — पुरानी और नयी काव्यधारा। गद्य खण्ड की तरह इसमें भी नयी काव्य-धारा की तीन उत्थान हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इस विभाजन में एकरूपता और समानता का अभाव है। ये खण्ड एकदूसरे से अलग प्रतीत होते हैं

उदाहरणार्थ काव्य-खण्ड के दूसरे प्रकरण के तृतीय उत्थान (छायावाद) तथा गद्यखण्ड के द्वितीय प्रकरण के तृतीय उत्थान में एकरूपता नहीं है।
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उस कालखण्ड को "गद्यखण्ड" कहा है। यह सही है कि आधु... ~~तकनीकों~~ तकनीकों के कारण उस युग में गद्य स... तेजी से विकसित हुआ और खासकर प्रेस ने साहित्य को प्रजातांत्रिक रूप दिया। समाचार... उपन्यास, आधुनिक ढंग के निबन्ध, कहानियाँ... प्रेस के प्रचार के बाद ही तेजी से आगे बढ़ी... पर उस युग का नाम अगर 'गद्य काल'

रख दिया जाय, तो वह काव्य प्रवृत्ति बिल... छूट जायेगी, जो आधुनिक विचारों से ... है। इसलिए हमें उस काल को आधुनिक... नाम ही अधिक उचित प्रतीत होता है।... काल को भी कई कालखण्डों में विभाजि... जा सकता है, जैसे :—

1. पुनर्जागरण काल — 1857 – 1900 ई०
2. जागरण सुधारकाल (द्विवेदीकाल) – 190...
3. छायावाद काल — 1918 – 193...
4. छायावादोत्तर काल –

(1)

① पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु काल)

1857 से 1900 तक के काल को पुनर्जागरण काल या भारतेन्दु काल के नाम से जाना जाता है। दोनों ही नाम हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रयुक्त होते हैं। यह काल राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण का समय है। ~~[illegible]~~ राजा राममोहन राय, केशव चंद्र सेन, दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द आदि के कारण एक नयी राष्ट्रीय - सांस्कृतिक चेतना का जन्म हुआ। इसका सीधा प्रभाव साहित्य पर पड़ा। साहित्य नये दृष्टिकोण से संपृक्त

हुआ और मध्यकालीन जड़ता को उसने पूरी तरह तोड़ दिया। इस दृष्टि से इस काल खण्ड को पुनर्जागरण काल कहा जाता है।

नामकरण करते समय ऐसे व्यक्ति को आधार बनाया जाता है जिससे उस कालखण्ड का इति प्रभावित हो। इस कालखण्ड में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पूरे हिन्दी - साहित्य पर छाये रहे। उन्होंने हिन्दी ग को भाषा और विषय की दृष्टि से एक नयी दी। मध्यकालीन वातावरण से जीवन और सा को निकालकर उन्हें आधुनिक रूप प्रदान करके उन्होंने सतत चेष्टा की। भाषा, भाव, साहित्

रूप आदि की दृष्टि से उन्होंने गद्य और काव्य
दोनों में हिन्दी-भाषियों का नेतृत्व किया। उनके
व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब अन्य कवियों और लेखकों
की रचनाओं में बराबर मिलता है। अतः इस
काल का नामकरण "भारतेन्दु काल" उपयुक्त है।

(2) जागरण सुधारकाल (द्विवेदी काल) 1900-1918

हिन्दी कविता को राष्ट्रीयता, प्रगति और
स्वच्छन्दता में जोड़ने का प्रमुख ~~कार्य~~ कार्य इस क
में हुआ। इस युग का नामकरण महावीर प्रसाद द्वि
के नाम पर "द्विवेदी काल" किया गया है। 1903
"सरस्वती" का सम्पादकत्व ग्रहण करने के बाद उ
खड़ी बोली का परिष्कार आरम्भ किया।
~~उन्होंने अनेक कवियों और लेखकों का~~ शुक्रवार
मार्ग निर्देशन किया।

समकालीन कवियों और लेखकों पर
अमिट छाप पड़ी। खुद द्विवेदी जी एक कुशल ले
समालोचक और सफल सम्पादक थे। जिस
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी भाषा और साहि
एक दिशा दिखाई, उसी प्रकार महावीर प्रसाद
ने हिन्दी भाषा का परिष्कार कर उसे एक
दिया। इन्हीं कारणों से इस काल को 'द्विवे
कहा जाता है।

राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और साहि
पर इस काल को जागरण सुधार काल
जाता है। इस काल में साहित्य के क्षेत्र
भाषा में सुधार और परिष्कार हुआ।